



Study AV Kand 12 Hindi

अथर्ववेद कांड 12 सूक्त 1 मातृ भूमि के गीत इसे पृथ्वी सूक्त के नाम से जाना जाता है – पृथ्वी देवता।

अथर्ववेद 12.1.1

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति ।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ।।1।।

(सत्यम्) सत्य (बृहत्) महान्, असीम, प्रगति का कारण (ऋतम्) वास्तविक अस्तित्व का ज्ञान, सृष्टि का सत्य (उग्रम्) शक्तिशाली (दीक्षा) संकल्पवान्, प्रतिबद्धता, स्व-अनुशासन (तपः) तपस्या (ब्रह्म) परमात्मा का दिव्य ज्ञान (यज्ञः) कल्याणकारी कार्य, सकारात्मकता, सहयोग (पृथिवीम्) भूमि को (धारयन्ति) धारण करता है (सः) वह (नः) हमारे (भूतस्य) पूर्वकाल में (भव्यस्य) भविष्य में (पत्नी) पोषण करने वाली (युरुम्) व्यापक रूप से फैले हुए (लोकम्) स्थान, अस्तित्व वाला संसार (पृथिवी) भूमि (नः) हमारे लिए (कृणोतु) बनाती है, उत्पन्न करती है।

व्याख्या :-

पृथ्वी के कौन से स्तम्भ हैं जो इसको धारण करते हैं और बनाये रखते हैं?

पृथ्वी के छः स्तम्भ हैं जो इसको धारण करते हैं और बनाये रखते हैं :-

1. सत्यम् बृहत् – सत्य जो महान्, असीम, प्रगति का कारण है।
2. ऋतम् – वास्तविक अस्तित्व का ज्ञान, सृष्टि का सत्य।
3. दीक्षा – संकल्पवान्, प्रतिबद्धता, स्व-अनुशासन।
4. तपः – तपस्याएँ।
5. ब्रह्म – परमात्मा का दिव्य ज्ञान।
6. यज्ञः – कल्याणकारी कार्य, सकारात्मकता, सहयोग।

वह पूर्वकाल में हमारा पालन-पोषण करने वाली थी, भविष्य में भी वह जारी रहेगी। धरती माता व्यापक फैले हुए स्थानों और हमारे अस्तित्व का संसार बनाती है, उत्पन्न करती है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

धरती के स्तम्भों का संरक्षण कौन कर सकता है?

धरती के इन स्तम्भों से अलग हटने का परिणाम क्या होगा?

धरती माता की तीनमुखी शक्तियाँ क्या हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



इस मन्त्र में एक महान् सकारात्मकता व्यक्त की गई है और एक गारण्टी दी गई है कि जब तक भूमि का अस्तित्व है तब तक यह छः महान्, श्रेष्ठ और दिव्य लक्षण भी विद्यमान रहेंगे। धरती माता पर्याप्त रूप से बलशाली और दिव्य हैं कि वह सभी जीवों और इनके लिए अपने स्तम्भों की रक्षा कर सके। धरती माता भविष्य में भी एक ताकतवर दिव्य शक्ति बनकर रहेगी। इसीलिए धरती को माता कहा जाता है। क्योंकि वह अपनी दिव्य शक्तियों से सबका पालन करती है।

यह मन्त्र हमें अपनी धरती माता का स्तम्भ बनने के लिए इन लक्षणों का अनुसरण करने की प्रेरणा भी देता है। इन महान् और श्रेष्ठ लक्षणों से भटकाव हमारे अपने ही जीवन को नष्ट कर देगा और इसके साथ ही समाज का सारा ताना-बाना भी नष्ट होगा।

इस सूक्त में 'पृथ्वी' देवता का आह्वान किया गया है जो प्रत्येक अस्तित्व के तीनों पहलुओं से सम्बन्धित है – भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक। भौतिक रूप से पृथ्वी सबको दिखाई देती है। इससे परे पृथ्वी की एक दिव्य शक्ति है जिसे उस परमात्मा के द्वारा शक्तियाँ दी गई हैं जो इस ब्रह्माण्ड की सर्वोच्च और पूर्ण आत्मा है। अतः हम पृथ्वी की दिव्य शक्ति का आह्वान करते हैं अर्थात् वह शक्ति जो भौतिक पृथ्वी से परे है।

सूक्ति 1. :- (सत्यम् बृहत् ऋतम् उग्रम् दीक्षा तपः ब्रह्म यज्ञः पृथिवीम् धारयन्ति – अथर्ववेद 12.1.1) पृथ्वी के छः स्तम्भ हैं जो इसको धारण करते हैं और बनाये रखते हैं :-

1. सत्यम् बृहत् – सत्य जो महान्, असीम, प्रगति का कारण है।
2. ऋतम् – वास्तविक अस्तित्व का ज्ञान, सृष्टि का सत्य।
3. दीक्षा – संकल्पवान, प्रतिबद्धता, स्व-अनुशासन।
4. तपः – तपस्याएँ।
5. ब्रह्म – परमात्मा का दिव्य ज्ञान।
6. यज्ञः – कल्याणकारी कार्य, सकारात्मकता, सहयोग।

सूक्ति 2. :- (सः नः भूतस्य भव्यस्य पत्नी – अथर्ववेद 12.1.1) धरती माता पूर्वकाल में हमारा पालन-पोषण करने वाली थी, भविष्य में भी वह जारी रहेगी।

सूक्ति 3. :- (युरुम् लोकम् पृथिवी नः कृणोतु – अथर्ववेद 12.1.1) धरती माता व्यापक फैले हुए स्थानों और हमारे अस्तित्व का संसार बनाती है, उत्पन्न करती है।

अथर्ववेद 12.1.2

असंबाधं बध्यतो मानवानां यस्या उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या ओषधीर्या बिभर्ति पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः॥2॥

(असंबाधम्) बिना बन्धन के, मुक्ति (बध्यतः) बन्धन से (मानवानाम्) मनुष्यों के लिए (यस्या) जिसकी (उद्वतः) ऊपर जाने की (प्रवतः) नीचे जाने की (समम्) समान, समतल (बहु) अनेक (नाना) भिन्न-भिन्न (वीर्याः) महत्त्वपूर्ण बल (औषधिः) जड़ी-बूटियाँ (या) जो (बिभर्ति) विशेष रूप से धारण करती है (पृथिवी) पृथ्वी (नः) हमारे लिए (प्रथताम्) फैलाती है (राध्यताम्) समृद्धि, सम्पदा, विकास (नः) हमारे लिए।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पृथ्वी की स्वतन्त्रता कहाँ तक है?

हमारे स्वास्थ्य के लिए पृथ्वी पर क्या उगता है?

धरती माता सभी मनुष्यों को बन्धन से मुक्ति प्रदान करती है, जिसकी अनेक प्रकार की भूमियाँ हैं — ऊपर जाती हुई, नीचे जाते हुई और समतल; जो विशेष रूप से और भिन्न-भिन्न प्रकार की महत्वपूर्ण बल देने वाली औषधियों को धारण करती है; वह सब कुछ (सभी भूमियाँ और जड़ी-बूटियाँ आदि) समृद्धि तथा हमारा विकास भी हमारे लिए विस्तृत करती है।

जीवन में सार्थकर्ता :—

अलग-अलग राष्ट्रों की भौगोलिक सीमाओं के बावजूद सर्वत्र भाई-चारे का विकास कैसे हो सकता है?

भोजन का अम्लीकरण क्या है?

धरती माता ने मनुष्यों को पूरी सक्षमता और स्वतंत्रता दी है कि वे किसी भी प्रकार की भूमि पर विचरण करें। परन्तु मनुष्यों ने अपने को संगठित करने और प्रशासन के नाम पर सीमाओं में बाँध लिया है। सीमाओं के बावजूद भी भाई-चारे की भावना और सभी मनुष्यों का सम्मान हो सकता है तथा सरकारों की सहभागिता से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर परस्पर आध्यात्मिक अनुभव सांझा करने के लिए और प्रेरणा के लिए विद्वानों को आमंत्रित किया जा सकता है।

धरती माता ने भिन्न-भिन्न प्रकार की भूमियों पर असंख्य जड़ी-बूटियों को उत्पन्न किया है। मनुष्यों को इन जड़ी-बूटियों और सब्जियों आदि का प्रयोग प्राकृतिक रूप से ही करना चाहिए, स्वास्थ्यवर्द्धक जीवन के लिए भोजन को आवश्यकता से अधिक पकाना या उसका अम्लीकरण करने से बचना चाहिए। धरती माता और उसके उत्पादों को न तो प्रदूषित करना चाहिए और न ही उन्हें अम्लीय बनाना चाहिए।

सूक्ति :— (पृथिवी नः प्रथताम् राध्यताम् नः — अथर्ववेद 12.1.2) धरती माता सब कुछ (सभी भूमियाँ और जड़ी-बूटियाँ आदि) समृद्धि तथा हमारा विकास भी हमारे लिए विस्तृत करती है।

अथर्ववेद 12.1.3

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः ।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु ।।3।।

(यस्याम्) जिस पर (समुद्रः) समुद्र (उत) और (सिन्धुः) नदियाँ (आपः) पानी के झरने और तालाब आदि (यस्याम्) जिस पर (अन्नम्) अनाज (कृष्टयः) खेती (संबभूवुः) उत्पन्न होते हैं (यस्याम्) जिस पर (इदम्) यह (जिन्वति) गति करती है (प्राणत्) श्वास (एजत्) प्रयास करते हुए (सः) वह (धरती माता) (नः) हमें (भूमिः) धरती माता (पूर्वपेये) प्रथम पेय, पीने को प्राथमिकता (दधातु) देती है, स्थापित करती है, हमारे में धारण करती है।

व्याख्या :-

धरती माता हमें क्या उपलब्ध कराती है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



धरती माता पर, जिस पर, समुद्र हैं; नदियाँ हैं; पानी के झरने और तालाब आदि हैं; अनाज तथा हर प्रकार के खेती उत्पाद उत्पन्न होते हैं; जहाँ पर ये मनुष्य लोग गति करते हैं, श्वास लेते हैं और प्रयास करते हैं, वह धरती माता हमें प्रथम पेय पदार्थ प्रदान करे या उन्हें हमारे अन्दर स्थापित करे अर्थात् हमें प्राथमिकता से पेय पदार्थ उपलब्ध हों।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमें किस तत्त्व का प्राथमिकता से भोग करना चाहिए?

जल में प्रचुर ऑक्सीजन है इसलिए जल का भोग करने से शरीर में भी ऑक्सीजन की प्रचुरता रहती है। इसे शरीर का हाइड्रेशन कहा जाता है। ऐसा शरीर अनेकों रोगों को अपने से दूर रखता है। सभी फलों को और सब्जियों का प्राकृतिक रूप में ही भोग किया जाना चाहिए, यहाँ तक कि नमक के बिना, क्योंकि नमक से सब्जियों और फलों में ऑक्सीजन कम हो जाती है। ताप पर सब्जियों को पकाने से भी इनका जल और पौष्टिकता कम हो जाती है।

हमारे शरीर के वजन का 70 प्रतिशत वजन पानी है। इसलिए शरीर में इस जल स्तर को बनाये रखना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। यह धरती माता का अत्यन्त सुन्दर उपहार है। धरती का पानी अनेकों प्रकार के महत्त्वपूर्ण लवण धारण करता है। ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 9वें सूक्त का अध्ययन जल के सम्बन्ध में अवश्य करना चाहिए।

सूक्ति :- (सः नः भूमिः पूर्वपेये दधातु – अथर्ववेद 12.1.3) वह धरती माता हमें प्रथम पेय पदार्थ प्रदान करे या उन्हें हमारे अन्दर स्थापित करे।

अथर्ववेद 12.1.4

यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजत्सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु।।4।।

(यस्याः) जिस पर (चतस्रः) चार (प्रदिशः) पूर्ण दिशाएँ (पृथिव्याः) पृथ्वी की (यस्याम्) जिस पर (अन्नम्) भोजन के अनाज आदि (कृष्टयः) खेती (सम् बभूवुः) समुचित उत्पन्न होते हैं (या) जो (बिभर्ति) धारण करती है, पालन करती है (बहुधा) अनेक प्रकार से (प्राणत्) श्वास (एजत्) प्रयास करते हुए (सः) वह (नः) हमें (भूमिः) धरती माता (गोषु) गाय अर्थात् मानसिक बल, ज्ञानेन्द्रियाँ (अपि) और (अन्ने) भोजन के अनाज, शारीरिक बल (दधातु) देती है, स्थापित करती है।

व्याख्या :-

शारीरिक और मानसिक बल के लिए हमें किसकी प्रार्थना करनी चाहिए?

धरती माता, जिस पर, चारों पूर्ण दिशाओं में सभी भोजन के अनाज तथा अन्य खेती के उत्पाद उत्पन्न होते हैं; जो श्वास लेते हुए और प्रयास करते हुए लोगों को धारण करती है और अनेक प्रकार से उनका पालन करती है। वह धरती माता हमारे अन्दर मानसिक बल के लिए गरुएँ अर्थात् ज्ञानेन्द्रियाँ प्रदान करें और धारण करें तथा शारीरिक बल के लिए हमें भोजन के अनाज आदि प्रदान करें।

जीवन में सार्थकर्ता :-



सभी श्रद्धालुओं के द्वारा पृथ्वी को माता कहकर क्यों सम्बोधित किया जाता है?
 सभी श्रद्धालुओं के द्वारा सूर्य को पिता कहकर क्यों सम्बोधित किया जाता है?
 अस्तित्वमय संसार की प्रत्येक वस्तु की तरह धरती माता के अस्तित्व के भी तीन आयाम हैं –
 शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक।
 अन्य दिव्य शक्तियों की तरह धरती माता भी प्रकृति में और शक्तियों में दिव्य है।
 इसलिए धरती माता की दिव्यता का आह्वान उसे माता कहकर ही किया जाता है, क्योंकि विशेष
 रूप से वह उत्पन्न करती है अर्थात् जन्म देती है और सभी जीवों के पालन के लिए प्रत्येक वस्तु
 को धारण करती है।
 इस अस्तित्वमय संसार में सूर्य एक महान् और दिव्य पिता है। वह अपनी किरणों की ऊर्जा धरती
 माता के गर्भ में डालता है जिससे वह सबको उत्पन्न कर सके और सबका पालन कर सके।

सूक्ति :- (सः नः भूमिः गोषु अपि अन्ने दधातु – अथर्ववेद 12.1.4) वह धरती माता हमारे अन्दर
 मानसिक बल के लिए गऊँ अर्थात् ज्ञानेन्द्रियाँ प्रदान करें और धारण करें तथा शारीरिक बल के
 लिए हमें भोजन के अनाज आदि प्रदान करें।

अथर्ववेद 12.1.5

यस्यां पूर्वे पूर्वजना विचक्रिरे यस्यां देवा असुरानभ्यवर्तयन्।
 गवामश्वानां वयसश्च विष्टा भगं वर्चः पृथिवी नो दधातु।।5।।

(यस्याम्) जिस पर (पूर्वे) पूर्वकाल में (पूर्वजना) पूर्वज (विचक्रिरे) विशेष रूप से करते (अपने कर्तव्य)
 (यस्याम्) जिस पर (देवाः) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (असुरान्) नकारात्मक, हिंसक, राक्षसों को
 (अभ्यवर्तयन्) हमला करते, पराजित करते (गवाम्) गऊँ का, ज्ञानेन्द्रियों का (अश्वानाम्) अश्वों का,
 कर्मेन्द्रियों का (वयसः) पक्षियों का, उड़ते हुए का (मन का) (च) और (विष्टाः) निवास और विश्राम का
 स्थान (भगम्) सुख-सुविधाएँ (वर्चः) वैभव, तरंगित ऊर्जा, आध्यात्मिक उन्नति, महिमा (पृथिवी) धरती
 माता (नः) हमें (दधातु) प्रदान करे, स्थापित करे।

व्याख्या :-

हमें सुखों, वैभव, तरंगित ऊर्जा, आध्यात्मिक उन्नति, महिमा इकट्ठे कौन दे सकता है?
 धरती माता, जिस पर हमारे पूर्वजों ने पूर्वकाल में विशेष रूप से अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया;
 जिस पर दिव्य (शक्तियों और लोगों) ने नकारात्मक, हिंसक और राक्षसी शक्तियों तथा लोगों पर
 हमला करके उन्हें पराजित किया; जो गऊँ, अश्वों और पक्षियों का आवास और विश्राम स्थल है
 तथा भूमि में से निकला यह शरीर ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों और उड़ने वाले मन का स्थान है। वह धरती
 माता सुखों, वैभव, तरंगित ऊर्जा, आध्यात्मिक उन्नति, महिमा को प्रदान करे, स्थापित करे और हमें
 आशीर्वाद दे।

जीवन में सार्थकर्ता :-

भौतिक सुखों और आध्यात्मिक लक्ष्य के बीच संतुलन कैसे स्थापित करें?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
 Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
 For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमारा भौतिक और मानसिक शरीर हमारे व्यक्तिगत जीवन में धरती माता का प्रतिनिधित्व करते हैं। सर्वोच्च दिव्य, परमात्मा, हमारे शरीर और धरती माता दोनों का निर्माता है। मनुष्य भी प्रकृति में दिव्य है, क्योंकि वह सर्वोच्च दिव्य की अनुभूति के लिए निश्चित हुआ है। धरती माता के सभी सुखों को भोगते हुए मनुष्य सामान्यतः अपनी आध्यात्मिक यात्रा से भटक जाते हैं। इसलिए यह मन्त्र स्मरण कराता है कि सभी मनुष्यों को अपनी माता के द्वारा दिये गये सुखों का आनन्द लेते हुए मन में केवल आध्यात्मिक लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए। भौतिक सुख तो केवल मानव रूप के अस्तित्व की रक्षा के लिए है जिससे वह आध्यात्मिक लक्ष्य तक पहुँच सके।

सूक्ति :- (भगम् वर्चः पृथिवी नः दधातु – अथर्ववेद 12.1.5) वह धरती माता सुखों, वैभव, तरंगित ऊर्जा, आध्यात्मिक उन्नति, महिमा को प्रदान करे, स्थापित करे और हमें आशीर्वाद दे।

अथर्ववेद 12.1.6

विश्वंभरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतो निवेशनी।
वैश्वानरं बिभ्रती भूमिरग्निमिन्द्रऋषभा द्रविणे नो दधातु ॥6॥

(विश्वंभरा) सबके लिए शरण, सबको धारण करती (वसुधानी) आवासों के लिए सम्पदा धारण करती (प्रतिष्ठा) स्थापित, दृढ़ता (हिरण्यवक्षा) छाती में स्वर्ण धारण किये (जगतः निवेशनी) गतिमय संसार में प्रदान करती है, गतिमय संसार को गतिविधियों में लगाती है (वैश्वानरम्) सब लोगों की (बिभ्रती) धारक (भूमिः) धरती माता (अग्निम्) अग्नि (इन्द्र ऋषभा) जिसका बल ऋषभ है अर्थात् परमात्मा, सूर्य और इन्द्र पुरुष (द्रविणे) सभी सम्पदाओं की शक्ति (नः) हमें (दधातु) दें, स्थापित करें।

व्याख्या :-

धरती माता हमें सभी सम्पदाओं की शक्ति से किस प्रकार आशीर्वाद देती है?
धरती माता हमें सभी सम्पदाओं की शक्ति सबके कल्याण के लिए निम्न लक्षणों सहित देती है, स्थापित करती है और हमें आशीर्वाद देती है :-

1. धरती माता विश्वंभरा है अर्थात् सबके लिए शरण, सबको धारण करती है।
2. धरती माता वसुधानी है अर्थात् आवासों के लिए सम्पदा धारण करती है।
3. धरती माता प्रतिष्ठा है अर्थात् स्थापित, दृढ़ है।
4. धरती माता हिरण्यवक्षा है अर्थात् जिसकी छाती में स्वर्ण धारण है।
5. धरती माता जगतः निवेशनी है अर्थात् गतिमय संसार में प्रदान करती है, गतिमय संसार को गतिविधियों में लगाती है।
6. धरती माता वैश्वानरम् बिभ्रती अग्निम् है अर्थात् सब लोगों के लिए अग्नि को धारण करती है।
7. धरती माता इन्द्र ऋषभा है अर्थात् इसका बल ऋषभ, परमात्मा, सूर्य और इन्द्र पुरुष है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

धरती माता तथा सभी अन्य दिव्य शक्तियों और लोगों की आध्यात्मिक सम्पदा क्या है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



धरती माता केवल भूमि की वित्तीय मूल्य के कारण ही सम्पदा का खजाना नहीं है किन्तु वह सूर्य के साथ यज्ञ कार्यों को करने वाले अपने दिव्य लक्षणों के कारण एक महान् सम्पदा है। जब हम मनुष्य लोग धरती माता के असंख्य सुखों और लाभों का भोग करते हैं तो हमें धरती माता के दिव्य लक्ष्य और शक्तियों को मन में धारण करना चाहिए और यहाँ तक कि इस सृष्टि की मूल शक्ति परमात्मा के उद्देश्यों और शक्तियों को भी ध्यान में रखना चाहिए। उन दिव्य उद्देश्यों और शक्तियों पर सामान्य चिन्तन के साथ भी कोई मनुष्य उन उद्देश्यों और शक्तियों और इस अस्तित्वमय संसार की प्रत्येक वस्तु को महसूस करके उनकी अनुभूति प्राप्त कर सकता है। जिनका प्रयोग सबके कल्याण के लिए होना चाहिए और मनुष्य का कर्तव्य स्थान तो केवल सर्वोच्च दिव्य परमात्मा और सभी दिव्य शक्तियों की संगति प्राप्त करना है।

धरती माता तथा अन्य सभी दिव्य शक्तियाँ और लोगों का सम्मान करके हम सर्वोच्च दिव्य, परमात्मा, की अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं।

सूक्ति :- (भूमि: द्रविणे नः दधातु – अथर्ववेद 12.1.6) धरती माता हमें सभी सम्पदाओं की शक्ति सबके कल्याण के लिए देती है, स्थापित करती है और आशीर्वाद देती है।

अथर्ववेद 12.1.7

यां रक्षन्त्यस्वप्ना विश्वदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम्।
सा नो मधु प्रियं दुहामथो उक्षतु वर्चसा ॥7॥

(याम्) जिसको (रक्षन्ति) संरक्षण करती है (अस्वप्नाः) जो सोया नहीं है अर्थात् जागृत, चेतन (विश्वदानीम्) सब कुछ देने वाला (देवाः) दिव्य (भूमिम्) मातृ भूमि (ऊपर की ओर उत्पन्न करती है) (पृथिवीम्) मातृ भूमि (क्षितिज पर विस्तृत) (अप्रमादम्) तुरन्त, बिना आलस्य के (सः) वह (नः) हमारे लिए (मधु प्रियम्) मधुरता से प्रेम करती (दुहाम्) पैदा करती (अथ) फिर (उक्षतु) वृद्धि करती (वर्चसा) वैभव, तरंगित ऊर्जा, महिमा, आध्यात्मिक उन्नति।

व्याख्या :-

भूमि और पृथ्वी में क्या अन्तर है?

कौन मातृ भूमि को संरक्षित करता है?

भूमि (खेती के उत्पादों को नीचे से ऊपर पैदा करती हुई) तथा पृथ्वी (क्षितिज पर विस्तृत) प्रत्येक वस्तु की दाता है, जिसको न सोये हुए अर्थात् जागृत, चेतन दिव्य पुरुष तुरन्त और बिना किसी आलस्य के संरक्षित करते हैं। उसके बाद वह हमें मधुर प्रेम से भरे हुए पदार्थ देती है और हमारी वैभव, तरंगित ऊर्जा, महिमा, आध्यात्मिक उन्नति से वृद्धि करती है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

धरती माता हमें क्या देती है?

हमारी आध्यात्मिक प्रगति में धरती माता की क्या सार्थकता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



धरती माता हमें वह सब कुछ देती है जो वर्तमान में हमारे पास है और जिस चीज की भी हमें आवश्यकता है जिसमें हमारा शरीर तथा हमारे पालन-पोषण के लिए भोजन और हमारे सुरक्षित जीवन के लिए आवास भी सम्मिलित है।

धरती माता हमारे भोजन के लिए खेती के उत्पाद प्रदान करती है, इसलिए इसे भूमि कहा जाता है (नीचे से ऊपर पैदा करने वाली)। धरती माता विस्तृत है और हमारे आवास के लिए स्वयं को उपलब्ध कराती है, इसलिए इसे पृथ्वी कहते हैं। शारीरिक और मानसिक समर्थन के अतिरिक्त केवल धरती माता ही हमें परमात्मा की संगति के आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर होने के लिए सुविधाएँ और प्रेरणाएँ प्रदान करती है, जो परमात्मा मनुष्यों सहित सभी दिव्यताओं का सर्वोच्च दिव्य निर्माता है।

इसलिए मनुष्य का यह कर्तव्य बन्धन है कि अपने आध्यात्मिक लक्ष्य के प्रति चेतन रहे, धरती माता को हर प्रकार के प्रदूषणों और खराब होने से बचाकर रखे, केवल तभी वह आध्यात्मिक प्रगति के लिए वैभव और मधुर पालनहारे भोजन का हकदार होगा।

सूक्ति :- (याम् रक्षन्ति अस्वप्नाः विश्वदानीम् देवाः भूमिम् पृथिवीम् अप्रमादम् – अथर्ववेद 12.1.7) भूमि (खेती के उत्पादों को नीचे से ऊपर पैदा करती हुई) तथा पृथ्वी (क्षितिज पर विस्तृत) प्रत्येक वस्तु की दाता है, जिसको न सोये हुए अर्थात् जागृत, चेतन दिव्य पुरुष तुरन्त और बिना किसी आलस्य के संरक्षित करते हैं।

अथर्ववेद 12.1.8

यार्णवेऽधि सलिलमग्र आसीद्वां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः।

यस्या हृदयं परमे व्यो मन्त्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।

सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातुमे॥8॥

(या) वह, जो (अर्णवे) समुद्र (अधि) भरपूर (सलिलम्) जल रूप में (अग्र) पूर्वकाल में (आसीत्) था (याम्) जिसको (मायाभिः) निर्माणात्मक बुद्धि के साथ (अन्वचरन्) पदचिन्हों का अनुसरण किया (मनीषिणः) मनीषी मनुष्य (यस्याः) जिसके (हृदयम्) हृदय, नियंत्रण शक्ति (परमे व्योमन्) सर्वोच्च आकाश (सत्येन्) सत्य के साथ (आवृतम्) आवृत, व्याप्त (अमृतम्) न मरने वाले (पृथिव्याः) धरती माता (विशाल फैली हुई) (सा) वह (नः) हमें (भूमिः) धरती माता (नीचे से ऊपर पैदा करती हुई) (त्विषिम्) महत्त्वपूर्ण शक्ति, बुद्धि (बलम्) बल (राष्ट्रे) हमारे राष्ट्र को (दधातु) देती है, स्थापित करती है (उत्तमे) सर्वोत्तम।

व्याख्या :-

धरती माता का हृदय कहाँ है?

धरती माता सभी राष्ट्रों को क्या सुनिश्चित करती है?

धरती माता जो जल से भरे हुए समुद्र में थी, जिसके सकारात्मक बुद्धि और हृदय अर्थात् जिसकी नियंत्रण शक्ति के पदचिन्हों का अनुसरण मननशील मनुष्यों ने किया, वह मातृभूमि, सर्वोच्च आकाश में है, सत्य से ढंकी हुई और न मरने वाली। वह हमें तथा हमारे राष्ट्र को सर्वोत्तम भूमि (खेती के

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



उत्पादन पैदा करने वाली) तथा महत्त्वपूर्ण शक्ति अर्थात् बुद्धि और बल देती है, स्थापित करती है और आशीर्वाद देती है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमें अपना मन और हृदय किसमें लगाना चाहिए?

परमे-व्योम कहाँ है?

समूची धरती माता के तीन अस्तित्वमय आयाम हैं अर्थात् शारीरिक या भौतिक शरीर, मन या हृदय तथा आध्यात्मिक नियंत्रण। जब उसका मन सर्वोच्च आकाश में है तो सभी मनुष्यों से अपेक्षित है कि अपना मन और हृदय पूरी चेतना के साथ उस सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा में लगायें।

वह सर्वशक्तिमान परमात्मा सभी जीवों के पालन-पोषण के लिए सभी पदार्थ तथा महत्त्वपूर्ण शक्तियाँ जैसे बुद्धि और बल मातृ भूमि के माध्यम से ही सुनिश्चित करवाता है।

हमें उसी मातृ भूमि के प्रति नतमस्तक होना चाहिए और उसके सभी बच्चों के कल्याण के लिए यज्ञ कार्य करने चाहिए। विद्वतापूर्ण मन और हृदय के साथ हमें अपने शरीर और सृष्टि के सर्वोच्च आकाश में स्थापित परमात्मा के साथ संगति करनी चाहिए, निश्चित रूप से सत्य का अनुसरण करते हुए और अमृत अवस्था की प्रार्थना करते हुए। अमृत अवस्था अर्थात् मुक्ति इस मानव जीवन में अमृत अवस्था का जीवन जीने से ही सम्भव है अर्थात् भौतिक पदार्थों के लिए न इच्छा करनी और न उनके लिए मरना।

सर्वोच्च आकाश अर्थात् परमे-व्योम इस भौतिक सृष्टि से परे है अर्थात् हमारे अस्तित्व के शारीरिक और मानसिक स्तर से परे, यह रिक्त स्थान से परे रिक्त स्थान है।

सूक्ति :- (यस्याः हृदयम् परमे व्योमन् सत्येन् आवृतम् अमृतम् पृथिव्याः — अथर्ववेद 12.1.8) वह मातृभूमि जिसका हृदय अर्थात् जिसकी नियंत्रण शक्ति, सर्वोच्च आकाश में है, सत्य से ढंकी हुई और न मरने वाली।

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171